International Journal of Research
Available at https://edupediapublications.org/journals
p-ISSN: 2348-6848
e-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 07
June 2017

संत साहित्य में नैतिक मूल्य

कविता कुमारी
हिन्दी विभाग
एसिस्टैंट प्रोफेसर,
सी0आर0ए0 कॉलेज,
सोनीपत–131001

संत काव्यधारा के दार्शनिक – सांस्कृतिक आधार अनेक है। जिनमें से प्रमुख रुपेण उल्लेखनीय है– उपनिषद, शंकराचार्य का अद्वैतदर्शन नाथ पंथ, इस्लाम धर्म तथा सुफी दर्शन। संत शब्द का नाम आते ही हमारे मन में एक साफ–सुथरी व मनमोहक छवि आती है। श्री पीताम्बरदत बडथ्वाल ने संत शब्द की व्युत्पति शांत शब्द से मानी है। श्री परशुराम चतुर्वेदी लिखते है कि संत शब्द उस व्यक्ति की और संकेत करता है। जिसने संत रुपी परम तत्व का अनुभव कर लिया हो और इस प्रकार अपने व्यक्तित्व से उपर उठकर उसके साथ तद्रुप हो गया है। जो संत अवरुप नित्य सिद्ध वस्तु का साक्षात्कार कर चुका हो वहीं संत है। संत साहित्य भावात्मक एवं अनुभूति प्रवण है उसमें किसी शास्त्र अथवा सिद्धान्त के प्रति अग्रह व्यक्त नहीं हुआ है संत साहित्य के सभी संत कवि साधनविहिन वातावरण में उत्पन्न हुए तथा वे भाषा, व्याकरण आदि के अनुशीलन से वंचित रहे। इसलिए उनके काव्य भाषा में परिषकार, परिमार्जन, परिनिष्ठता और साहित्यिकता नहीं है। परन्तु उनके काव्य में नैतिक मूल्यों का निरुपण, सत्य का विवेचन एवं सत्य का प्रचार प्रसार उनकी कविता का मूल लक्ष्य था। उनका ध्यान न काव्य सौष्ठव की और था और न भाषापरिमार्जन की और थ। यहां तक कि कवि और कवि कर्म की उन्होंने स्वतः आलोचना की है। संतकाव्य में साधारणीकरण भी है और वस्तुस्थिति का

सौंदर्यबोध थीपरंतु इसकी रचना भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भावों की दृष्टि से रस निष्पति के निमित नहीं की गई। वस्तुतः इस और इन कमियों की प्रवृति भी नहीं थी। संतकाव्य की प्रमुख और एकमात्र उद्देश्य नैतिक मूल्यों का बढ़ावा देना था। भक्ति काल इस निर्गुण संत काव्य परम्परा में कबीर का प्रमुख स्थान है। कबीर ही उसके प्रर्वतक माने जाते है। अनेक लौकिक और अलौकिक बातों का समावेश हो जाने से कबीर के जीवनवृत के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। कबीर की वाणी का संग्रह बीजक नाम से प्रसिद्ध है। जिसके तीन भाग है। रमैनी, संवाद शाखि। साखियों में दोहा छंद से माध्यम से सांप्रदायिक शिक्षा और सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है। उनका मानना था कि अज्ञान को मिटाने के लिए आत्मज्ञान होना बहुत जरुरी है। मुसलमान कबीर को शंख तर्क का शिष्य मानते हैं।

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में भक्ति की दो धाराएं–सगुण व निर्गुण प्रवाहित हुई। सगुण के अंतर्गत राम कृष्ण भक्ति की शाखाएं आती है। निगुण के अंतर्गत संत और सुफियों का कारण आता है। आचार्य शुक्ल ने नामदेव एवं कबीर द्वारा प्रवर्तित भक्ति धारा को निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा का नाम दिया है। डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे भक्ति साहित्य तथा डॉ0 रामकुमार वर्मा ने इसे संत काव्य परम्परा का नाम दिया हैं ज्ञानाश्रयी शब्द से यह भ्रांति उत्पन्न होती है कि इस धारा के कवियों ने ज्ञानातत्व को सर्वाधिक महत्व दिया है। जबकि वास्तव में इन्होंने प्रेम के सम्मुख समस्त ज्ञानाराशि को तुच्छ माना है। संत काव्य का वर्गीकरण दो दृष्टियों से किया गया एक तो शुद्ध दार्शनिक दृष्टि से तथ दूसरे संत कवियों द्वारा ग्रहीत साधना प्रणाली की दृष्टि से। संत साहित्य में वाटिका का श्रम साध्य अथवा कृत्रिम सौंदर्य नहीं। उनमें वनराजी की प्रकृतिश्री है। इस काव्य में आध्यात्मिक विषयों की अभिव्यक्ति हुई है। पर वह जनजीवन में डुबी हुई अनुभुतियों से सम्पन्न है। संतकाव्य से अनेक धार्मिक सम्प्रदायों के

प्रभाव को आत्मसात किया है। किन्तु इसमें धर्म अथवा साधना की कोई शास्त्रीय व्याख्या नहीं की बल्कि जन भाषा में उसका मर्म है। इस काव्य में जनजीवन सत्य को अभिव्यक्ति अलंकारविहिन, सीधी, सादी भाषा में है जहां पग–पग पर स्वाधीन चिन्तन प्रतिफलित हुआ है। संत साहित्य साधना लोकपक्ष तथा काव्य वैभव, सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। नाथ सम्प्रदाय की पद्धति शास्त्रीय थी और साधना व्यक्तिगत थी। किन्तु संत सम्प्रदाय की पद्धति स्वतन्त्र और साधना सामाजिक थी। संत कवियों की विचारसारणि निजी अनुभूतियों पर आद्धत है अतः उसमें दर्शन की शुष्कता न होकर काव्य की कोमलता है। संत साहित्य में एक अद्भुत विचारगत साम्य है, और वे साम्य है नैतिक मूल्यों का जीवन में अपनाने का। संत साहित्य में नेतिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए निम्न तथ्यों का सहारा लिया।

निर्गुण ईश्वर में विश्वास– सभी संत निर्गुण ईश्वर में विश्वास रखते थे। उन्होंने ईश्वर के सगुण रूप का विरोध किया उनका मानना था कि सभी वर्णों और समुची जातियों के लिए वह निर्गुण एकमात्र ज्ञानगम्य है। वह अविगत है यह सारा संसार उस अक्षय पुरुष रुपी पेड़ के पते के समान है। ईश्वर घट–घट में विराजमान है। कबीर का कहना है कि कस्तूरी मृग की नाभि में रहती है। और वह कार्य ही उसे वन में ढूंढने के लिए भटकता फिरता है उसी प्रकार राम घट–घट व्यापी है उसे बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है।

बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध– संत कवियों ने बहुदेववाद तथा अवतारवाद पर अविश्वास प्रकट करते हुए इस भावना का निर्भिकतापूर्वक खंडन किया है। उनका मानना था कि हिन्दु–मुस्लिम तथा अन्य जातियों में विद्वेषाग्नि को शांत करके उसमें एकता की स्थापना के लिए एकेश्वरवाद होना चाहिए और बहुदेववाद का घोर विरोध किया। संतों का मानना है कि अवतार जन्म–मरण के बंधन से ग्रस्त है।

सद्गुरु का महत्व– गुरु को भगवान से भी अधिक महत्व देना संतकवियों की एक सर्वमान्य विशेषता है। उनका मानना था कि राम की कृपा भी तभी होती है जब गुरु की कृपा होती है। यो तो गुरु की महता सगुण भक्त कवियों में भी मिलती है पर अंतर यह है कि संत कवि गुरु को परमेश्वर भी मान लेते है। अर्थात् निर्गुण भक्त कवि सगुण भक्ति कवियों की अपेक्षा गुरु को अधिक महत्व देते हैं।

जाति–पाति के भेदभाव का विरोध– सभी संत कवि जाति पाति और गर्व–भेद के प्रबल विरोधी है। ये लोग एक सार्वभौम मानव धर्म के प्रतिष्ठापक थे इनकी दृष्टि में भगवदभक्ति में सबको समान अधिकार है। उनका मानना था कोई भी जातिश्रेष्ठ नहीं है और न ही कोई निम्न। अर्थात् सभी जाति समान है।

रुढ़ियों और आडम्बरों का विरोध– प्रायः सभी संत कवियों ने रुढ़ियों मिथ्या आडम्बरों तथा अंधविश्वासों की कटु आलोचना की है। ये लोग तत्कालीन समाज में पाई जाने वाली इन कुप्रवृतितों का कड़ा विरोध करते थे। इन्होंने मूर्तिपूजा, धर्म के नाम पर की जाने वाली हिंसा, तीर्थ, व्रत, रोजा, नमाज आदि विधि–विधानों, बाह्य आडम्बरों, जाति–पाति के भेद आदि का डटकर विरोध किया।

रहस्यवाद– संत सम्प्रदाय में प्रेमाशक्ति और अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है।

लोक संग्रह की भावना– इस वर्ग के सभी कवि पारिवारिक जीवन व्यतीत करने वाले थे। नाथपंथियों की भांति योगी नहीं थे। यही कारण है कि उनकी वाणी में जीवनगत अनुभव की सर्वागीणता है। सन्तों की साधना में वैयक्तिकता की अपेक्षा सामाजिकता अधिक है। सन्तों ने आत्मशुद्धि पर बहुत बल दिया है। किन्तु वह भी समाज की दृष्टि में रखकर चली है।

नारी के प्रति दृष्टिकोण– संत कवियों ने नारी को माया का प्रतीक माना है। उनका मानना है कि कनक और कामिनी दोनों दुर्गम घाटियाँ है परन्तु साथ–साथ

सती व पतिव्रता के आदर्श की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

माया से सावधान– माया से सावधान रहने का उपदेश सभी कवियों ने दिया है क्योंकि रमैया की दुल्हन ने सब को बाजार में लुट लिया और ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उसी के वशीभूत है। यह भगवान से मिलने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। यह माया महागमिनी है इसने मधुर वाणी बोलकर अपनी तिरगुन फांस में सबको फंसा लिया है। संतों का साहित्य अपने युग की मांग के अनुसार सर्जित हुआ था, युगीन विषमताओं का समतामूलक संदेश संत साहित्य में निहित था। संत साहित्य में संस्कृति के सभी तत्व शामिल है। जैनों, बौद्धों और नाथों की साधना पद्धति और विचार धारा का संतों पर गम्भीर प्रभाव पड़ा है। संतों का प्रमुख उद्देश्य नैतिक मूल्यों को बढ़ा देना था उनकी भी रचना नैतिक मूल्यविहिन नहीं हो सकती। उनके बारे में कहा भी गया है कि समाज सुधारक पहले तथा कवि बाद में है। और समाज में को सुधारने के लिए या ये कहे कि समाज को सुधारने के लिए नैतिक मूल्यों का पुरजोर प्रयोग होना चाहिए यदि प्रत्येक आदमी नैतिक मूल्यों का पालन करता है तो समाज में स्वतः शांति आ जाएगी और संत साहित्य में नैतिक मूल्यों पर पूरा समर्थन किया गया है। संत साहित्य में गुरु, भक्ति, साधु–संग, क्षमा, संतोष आदि का उपदेश दिया है तो दूसरी और कपट, माया, तृष्णा, कामिनी, कांचन, तीर्थ, वृत, मांसाहार, मूर्तिपूजा का खंडन किया है।

संदर्भ

1. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृतियाँ– डॉ0 शिवकुमार शर्मा
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ0 नगेन्द्र व डॉ0 हरदयाल
3. डॉ0 हुकुमचन्द राजपाल– हिन्दी साहित्य का इतिहास
4. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास– डॉ0 लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय
5. भारतीय साहित्य की रुपरेखा– डॉ0 भोलाशंकर व्यास